



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनिक भास्कर	21.5.2022	2	5-8

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग: वीसी

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

भास्कर न्यूज़ | हिसार

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर आमदनी बढ़ा सकते हैं। मधुमक्खी पालन किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान



विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व

सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती है। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव

शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माध्वी पदार्थ विशेषतः प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक (प्रशिक्षण) ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एच.डी. कौशिक ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... दिनांक 21.05.2020

दिनांक 21.05.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 4-8

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी जिलों में सर्वाधिक मधुमक्खी पालक

जागरण संवाददाता, हिसार : लॉकडाउन के कारण कई लोग ऐसे हैं जो बेरोजगार हो गए हैं या बेरोजगार युवा जो कुछ काम करना चाहते हैं। ऐसे युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर रोजगार कमा सकते हैं। आपको बता दें कि हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम राज्य है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अंबाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 फीसद मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है। दरअसल चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस पर वेबिनार आयोजित किया गया।



विश्व मधुमक्खी दिवस पर एचएयू में आयोजित वेबिनार में संबोधित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. कांबोज व मौजूद अन्य। • पी.आर.ओ।

हरियाणा में मधुमक्खियों को नौ माह तक मिलता है भोजन

हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है। कुलपति बताते हैं कि राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं। जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम,

कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग नौ माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं।

महामारी के समय इम्युनिटी बूस्टर का काम करेगा शहद

वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माखी पदार्थ प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं।



परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक

प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यतः राया व सरसों में अच्छी परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य

फसलें जैसे अरहर, बेल वाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली, अमरुद, नींबू, नाशपती आदि में मधुमक्खियों द्वारा परागण से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... प.सं. (अ) हिसार

दिनांक २१.०५.२०२१ पृष्ठ संख्या..... ५..... कॉलम..... ७:८.....

‘मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वैबिनार आयोजित’

हिसार, 20 मई (पकेस): बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट

विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वैबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	21.5.2021	2	1-3

मधुमक्खी दिवस पर एचएयू में वेबिनार

हिसार(ब्यूरो)। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। खेती के साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर आमदनी बढ़ा सकते हैं। मधुमक्खी पालन को थोड़े पैसे से शुरू कर बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षण विभाग के

सह निदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी।

कोट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एचडी कौशिक, विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार, सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी, सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने भी विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा की आवाज	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : कुलपति

हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का बेरोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ सकते हैं। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कॉन्वेज ने सायना नेहरू कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन - 'अवसर और चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार को संबोधित करते हुए कही। मुख्य अतिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लंबे भू-भाग हैं जहाँ सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियाँ, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रांत है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भारत सारथी	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

© May 20, 2021 • कृषि प्रौद्योगिकी प्रवर्धन एवं विज्ञान संस्थान, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज



एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियाँ
विषय पर वेबिनार आयोजित

दिसंबर - 20 अर्द्ध - वेबिनार मधुमक्खी पालन को अनाजों के अनाज खुर का टैग मधुमक्खी पालन को अनाज विज्ञान क्षेत्रों के ज्ञान-उपय मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अनाजों के अनाज में इलाका कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को विज्ञान क्षेत्रों के क्षेत्रों के क्षेत्रों के अपने व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं। वे विषय प्रोफेसर चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के वरुं।

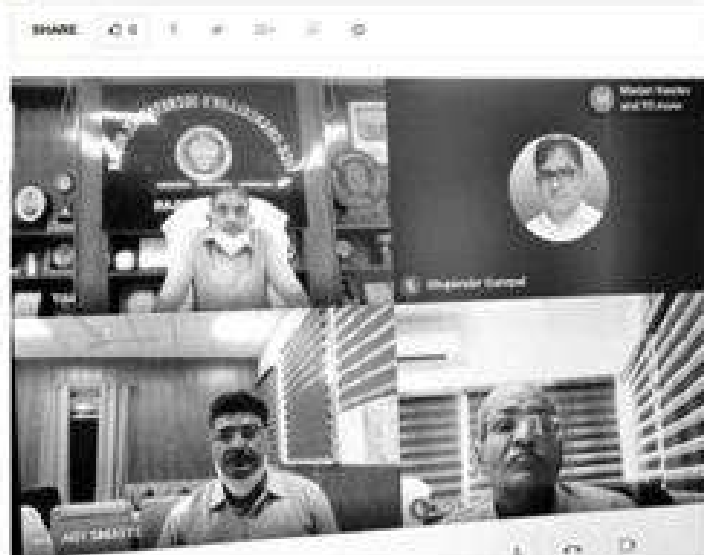


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	21.05.2021	--	--

पृष्ठ संख्या : 1 दिनांक : 21.05.2021 : शहर का पता : 151001, हरियाणा

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : कुलपति



एषियन में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

विचार

वेबिनार: मधुमक्खी पालन को अवसर बनाने का समय है। इसके अवसर विचार करने के साथ साथ मधुमक्खी पालन को चुनौती बनाने के साथ ही अवसर बनाने का समय है। मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा।

मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा। मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा। मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा।

मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा। मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा। मधुमक्खी पालन को विकसित करने के लिए हमें अपने व्यवसाय को भी समय देना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	20.05.2021	--	--

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आयदही में इजाजत कर सकते हैं। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन अवसर और चुनौतियां विषय पर एक अनलाइन वेबिनार को शरीर मुरुमार्तिभि संबोधित कर रहे थे। मुरुमार्तिभि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में गिरावट है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे धू-धान हैं जहाँ सरसों, सरपट्ट, झूजमूड़ी, धरारीम, कपास, बाजरा, अरहर, चौर, फल व सब्जियां, आदि फसलों लगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर



हिसार। वेबिनार में संबोधित करते मुरुमार्तिभि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व सौदूर अजय।

मात्र में लगभग 9 सप्ताह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के दिशा में सर्वोत्तम प्रांत है। वैश्विक स्तर पर

महामारी ने हमें मानव शरीर को प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है।

मुरुमार्तिभि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व मध्यम किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर

अपना सकते हैं। मधुमक्खी पालनकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यतः राप व सरसों में अच्छे परिणाम क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य फसलों जैसे अरहर, केला जलरी सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, भुली को भी बचानी, अमरक, तिलगू, नारानी आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर परिणाम से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन से शहर के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे सोप, प्रोपेनिस पराग, राबल जैसी इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन को महत्त्व पर जोरकरी दी। महाधक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विविधताएं विषय पर प्रकाश डाला।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हिसार टुडे

21.05.2021

--

--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

टुडे न्यूज़ | हिसार

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा



वेबिनार में संबोधित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।

फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती है। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय

पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	20.05.2021	-	-

ध

हिसार, बौधवार, 20 मई 2021

2

मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर करें आमदनी में इजाफा: कुलपति

हिसार/20 मई/रिपोर्टर

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर जीआर काम्बोज ने कहे। ये सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन- अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, मफेदा, मूरजमुखी, बरसीम, कपास, चाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन

उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहवाड़ जिलों में भी यह व्यवसाय विकसित है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक रहद तथा अन्य माधुमक्खी पदार्थ विशेषतः प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं। मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। किलहनी फसलों मुख्यतः राया व सरसों में अच्छे परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है।

मधुमक्खी पालन से रहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रॉयल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। दुनियाभर में मधुमक्खी पालन ग्रामीण समुदायों के लिए कम लागत वाला व्यवसाय है तथा ग्रामीण विकास के साथ-साथ यानिकी, बागवानी, कृषि, पर्यावरण संरक्षण जैसे सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक गोदारा, सह निदेशक (प्रशिक्षण) ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एचडी कौशिक ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन की महत्ता पर जानकारी दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुदीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विविधताएं विषय पर प्रकाश डाला। कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	20.05.2021	-	-

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रो. बी.आर. काम्बोज

एचाएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

पाठकपक्ष न्यूज
हिसार, 20 मई : बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का उद्योग शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आयवृत्तों में इजाजत कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान छोड़े से पहले से शुरू कर अपने व्यवसाय को बढ़ा सकें तक कहा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये सहज विद्यालय कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कोट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को वीडियो मुद्रासंचि विधेयिका कर रहे थे।

मुख्यसंचि ने कहा कि हरियाणा जसल उत्पादन व उपभोग में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे स्थाने भू-भाग हैं जहां मारवा, मरवा, मूजमूजी, बारीय, कासम, काजरा, अहार, खैर, फल व सब्जियां, जदि जसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को उष्ण स्थल में लागण व यह तक भोजन उपलब्ध करावती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के विस्तार से सश्रीतम ज्ञान है। इसके अलावा पूर्वी जिलों (करनोल, समुतानगर, बुरुखेव, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहताक, मेहरी, महेंद्रगढ़, हिसार, धिबानी, मिरसा व फरीदाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकसितशील है व इसके और विकसित होने की उच्च संभावनाएं हैं। वैश्विक कोटेशन ग्लोबल ने हमें मानव शरीर की प्रतिक्रिया क्षमता (इम्पुनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का पताला कर दिया है। प्राकृतिक सहाय तथा अन्य मानवी पदार्थ विरोधक, प्रोबैरियोस और पालन मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्पुनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने जा रहे हैं।



मधुमक्खी पालनकरण क्रिया द्वारा जसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। जिनहने जसली मुख्यतः राध व मारवा में अच्छी पैदावार क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य जसली जैसे अहार, फल वाले सब्जियां, काज, सोभी, फलर, मुली की बीज वाली, अमरुद, निम्बू, जसली आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर पैदावार से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन में सहाय के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे प्रोबैरियोस पालन, राफल जैसे इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं। दुर्लभता में मधुमक्खी पालन हाथीय मनुष्यों के लिए काम लगाने वाला व्यवसाय है तथा हाथीय विकास के साथ-साथ वॉलिकी, कागानी, कृषि, पर्यावरण संरक्षण जैसे सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के सुधारण अवसर पर डॉ. अशोक चोपड़ा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण) ने मुख्यसंचि का स्वागत किया। विद्यार्थी शिक्षा निदेशक डॉ. सुधीरकाश ने कार्यक्रम को सफलता की विस्तृत जानकारी दी और प्रतिभागियों ने इस वेबिनार का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आग्रह किया। कोट विज्ञान विभाग से रोबोटीकृत प्रोफेसर राध.बी. बरिडिक ने मधुमक्खी पालन के समय चुनौतियां और आहार विज्ञान पर अपने विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन को भारत पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। सहायक निदेशक डॉ. सुनील कुमार ने मधुमक्खी पालन को विकसित करने पर विस्तृत प्रस्ताव ज्ञान। कोट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का वेबिनार के व्यवसाय अवसर पर फायदा किया।

परागकरण क्रिया द्वारा जसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक
मुख्यसंचि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमित किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैश्वीयक व्यवसाय के रूप पर अपना सकते हैं।

